www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ९

सोमवार २ दिसम्बर, '६८

अन्य पृष्ठों पर

एक प्रेमपूर्ण मांग —विनोबा १०६

हंगामे की राजनीति और भारत से अपेक्षा —सम्पादकीय १०७

राजस्थान-प्रदेशदान अभियान १०८

शहरी लोगों को विनोबा का आह्वान —गायत्री प्रसाद १०९

हाथल की ग्रामसभा—४ —अवध प्रसाद १११

आन्दोलन के समाचार ११२

परिशिष्ट
"गाँव की बात"

आवश्यक सूचना

"भूदान-यज्ञ" के १८ नवम्बर '६८ के अंक का परिशिष्ट "गाँव की बात" जो मध्यावधि चुनाव परिशिष्टांक था, वह दो रंगों में दुबारा छपा है। आशा है, जिन राज्यों में मध्यावधि चुनाव हो रहे हैं, उन राज्यों के मतदाताओं तक इस विशेष अंक को पहुँचाने की कोशिश की जायेगी। जो साथी मँगाना चाहें, वे २० पैसे प्रति अंक की दर से मँगा सकते हैं। —व्यवस्थापक

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

परिग्रह : एक अपराध

जब मैंने अपने-आपको राजनीतिक जीवन के भँवरों में खिंचा हुआ पाया, तब मैंने अपने-आपसे पूछा कि मुझे अनैतिकता से, असत्य से और जिसे राजनीतिक लाभ कहा जाता है उससे अछूता रहने के लिए क्या करना जरूरी है ? मैं निश्चित रूप से इस नतीजे पर पहुँचा कि यदि मुझे उन लोगों की सेवा करनी है, जिनके बीच मेरा जीवन बीतनेवाला है और जिनकी कठिनाइयों को मैं दिन-प्रतिदिन देखता हूँ, तो मुझे समूची सम्पत्ति तथा सारे परिग्रह का त्याग कर देना चाहिए।

मैं सचाई के साथ आपसे यह नहीं कह सकता कि ज्यों ही मैं इस निश्चय पर पहुँचा त्यों ही मैंने एकदम प्रत्येक चीज का परित्याग कर दिया। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि पहले-पहल इस त्याग की प्रगति धीमी रही। और आज जब मैं संघर्ष के उन दिनों को याद करता हूँ, तो मैं देखता हूँ कि आरम्भ में यह त्याग दुःखद भी था। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गये वैसे-वैसे मैं यह महसूस करता गया कि कई अन्य चीजों का भी, जिन्हें मैं तब तक अपनी मानता था, मुझे संपूर्ण त्याग करना चाहिए, और एक समय आया जब उन वस्तुओं का त्याग मेरे लिए निश्चित रूप से हर्ष का विषय हो गया। और तब एक के बाद एक वे सारी वस्तुएँ बहुत तेजी से मुझसे छूटती गयीं। उनके छूटने से मेरे कन्धों से एक भारी बोझ उतर गया और मुझे लगा कि अब मैं आराम के साथ चल सकता हूँ तथा अपने बन्धुओं की सेवा का कार्य भी बड़ी निश्चिन्तता और अधिक प्रसन्नता के साथ कर सकता हूँ। फिर तो किसी भी चीज का परिग्रह मेरे लिए कष्टदायक और भार रूप बन गया। उस हर्ष के कारण की खोज करते हुए मैंने पाया कि यदि मैं किसी भी चीज को अपनी मानकर अपने पास रखता हूँ, तो मुझे सारी दुनिया से उसकी रक्षा भी करनी पड़ेगी। मैंने यह भी देखा कि कई लोग हैं जिनके पास वह चीज नहीं हैं, यद्यपि वे उसे चाहते हैं, और यदि कुछ भूखे, मेरे साथ बँटवारा करके ही सन्तुष्ट न हों, बल्कि उसे मुझसे छीन लेना भी चाहें, तो मुझे पुलिस की सहायता भी प्राप्त करनी होगी। मैंने अपने-आपसे कहा : यदि वे लोग इसे चाहते हैं और मुझसे ले लेते हैं, तो ऐसा वे किसी ईर्ष्यापूर्ण हेतु से नहीं करेंगे, लेकिन इसलिए करेंगे कि उनकी आवश्यकता मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक है।

और तब मैंने अपने आपसे कहा : परिग्रह मुझे अपराध मालूम होता है। मैं उसी स्थिति में अमुक चीजों का संग्रह कर सकता हूँ, जब मुझे ज्ञात हो जाय कि उन चीजों को रखना चाहनेवाले दूसरे लोग भी उनका संग्रह कर सकते हैं। लेकिन हम जानते हैं—हममें से हरएक अपने अनुभव से कह सकता है—कि ऐसा होना असम्भव है। अतएव एक ही चीज ऐसी है, जिसे सब रख सकते हैं, और वह है अपरिग्रह—कोई भी चीज अपने पास न रखना। —मो० क० गांधी

ता० २७-९-१९३१ को लन्दन के गिल्ड-हाल में किये गये भाषण से।

www.vinoba.in

एक प्रेमपूर्ण माँग

नौकरीपेशा और व्यापारी लोग सर्वोदय-काम के लिए अपनी आमदनी का ढाई प्रतिशत दान दें —विनोबा

अभी आप लोगों ने एक व्यर्थ कार्यक्रम किया, जिसमें आठ-दस मिनट गये। कुछ नाम सुनाये गये—राम, कृष्ण, हरि, वासुदेव ……(परिचय कराया गया था), जो सारे भारत में हुआ करते हैं। वे नाम हम संध्या में सुनते हैं और विष्णु-सहस्रनाम में भी सुनते हैं। तो यहाँ सुनाने में कोई मतलब नहीं होता। फिर रूप दिखाये गये। एक दफा रूप देखकर याद होगा नहीं। बार-बार देखेंगे तब ध्यान में होगा। लेकिन बेमतलब होते हुए भी ऐसे कार्यक्रम प्रेम के लिए करने होते हैं। और प्रेम से बढ़कर कोई मतलब दुनिया में है नहीं। यह प्रेम हमको व्यापक करना है भारत में, और व्यापक करना है विश्व में।

आज सर्वत्र इस गुण की कमी पायी जाती है। क्योंकि छोटे-छोटे स्वार्थ बढ़े हैं, मनुष्य के चित्त पर दबाव है—आर्थिक, मानसिक। इसमें लोगों का दोष नहीं, लेकिन योजना ही ऐसी बनायी गयी कि उसके कारण देश में पैसा बढ़ा और उत्पादन बढ़ा नहीं। पैसा कितना बढ़ा? दुगुने से भी अधिक। और उत्पादन कितना बढ़ा, क्या प्रति व्यक्ति अनाज बढ़ा? अनाज बढ़ता तो अकाल की नौबत क्यों आती? और आज भारत को दूसरे देशों से अनाज माँगना पड़ रहा है, कितनी गुलामी करनी पड़ रही है! वह नौबत क्यों आती? देश में पैसा बढ़ गया। न अनाज बढ़ा, न फल बढ़ा, न तरकारी बढ़ी; न दूध बढ़ा। दूध की कहानी तो ऐसी है कि जब भारत और पाकिस्तान एक थे तब प्रति व्यक्ति सात औंस दूध था। अब जब कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान बन गये तब ज्यादा दूध देनेवाली गायें पाकिस्तानवाले प्रदेश में गयीं। भारत में प्रति व्यक्ति पाँच औंस दूध हुआ। और कुछ दिन पहले मुझे सुनाया गया कि पाँच औंसवाली बात तो अब पुरानी हो गयी। अब भारत में प्रति व्यक्ति तीन औंस दूध है। तीन औंस यानी साढ़े सात तोला। उसमें छेना भी होगा, मिठाई भी होगी, चाय के लिए भी होगा, और उसमें गाय का भी दूध आया, भैंस का भी आया, बकरी का भी आया; और हमको सुनाया गया कि गधे का दूध भी इसमें शामिल है। इसका अर्थ क्या हुआ? बढ़ा क्या भारत में? पैसा बढ़ा और पैसे के साथ भोग-विलास के साधन बढ़े।

मैं कहना यह चाहता था कि अभी प्रेम बड़ा महँगा है। मानव का मूल्य घट गया है। हर चीज का मूल्य बढ़ गया है, लेकिन मानव का घट गया है। मैं नहीं मानता कि अगर कोई हरिश्चन्द्र ने किया था, वैसे मनुष्य को बेचने जाय तो उसका पैसा मिलेगा। घोड़ा बेचे तो पैसा मिलेगा, गाय बेचे तो पैसा मिलेगा, लेकिन मनुष्य को बेचेगा तो पैसा नहीं मिलेगा। क्योंकि लोक-संख्या इतनी बढ़ी है तो और मनुष्य को लेकर क्या करेंगे? यह अलग बात है कि घर में मेहनत करने के लिए किसीको रख सकते हैं, लेकिन पैसा देकर खरीदेंगे नहीं। तात्पर्य, प्रेम बहुत महँगा हुआ है, मानव की कीमत घट गयी है। इसलिए आपने अभी नाम सुनाने का काम किया वह सार्थक है।

लेकिन बाबा आपको लूटने आया है। आपने सोचा होगा कि बाबा आया तो उसकी खिलाई-पिलाई कर देंगे। लेकिन उतने से नहीं होगा, बाबा तो लूटने आया है। जब हमने भूदान माँगना शुरू किया तब दुनिया भर में चर्चा चली और अमेरिका के एक मासिक 'टाईम' में 'दिन में, प्रेम से लूटनेवाला बाबा' आया है, ऐसा वर्णन आया था। तो अभी हम जो कहना चाहते हैं वह दो-तीन मिनट में कह देंगे। हमको कहना तो थोड़ा है, आपको करना अधिक है।

अभी भारत में ग्रामदान हो रहे हैं। गाँव के जमीन का २० वाँ हिस्सा लोग प्रेम के लिए देते हैं। अपनी कमाई का ४० वाँ हिस्सा ग्रामसभा को देते हैं। यह सारा लिखित होता है और तदनुसार वे देते हैं। गाँव के सभी छोटे-बड़े काश्तकारों से बाबा उपज का ४० वाँ हिस्सा माँगता है। अब आगे के काम के लिए—ग्रामसभा बनाना, जमीन का बँटवारा करना आदि काम करने के लिए कार्यकर्ताओं की सेना, जो सतत गाँव-गाँव में घूमती रहेगी, खड़ी करनी है। उनके योगक्षेम के लिए मैं आप लोगों से माँग करता हूँ कि आप अपनी मासिक आमदनी का ढाई प्रतिशत दीजिए। बाबा की यह माँग हरएक को लागू है। मैं एक मिसाल दे दूँ। गया जिले में एक मीटिंग हुई थी। वकील, डाक्टर, इंजीनियर वगैरह उसमें आये थे। मैंने उनसे यही कहा कि मैं गाँव-गाँव के किसानों से ४० वाँ हिस्सा माँग रहा हूँ तो आप इंजीनियर, वकील, डाक्टर, सरकारी अधिकारी और भी बड़े-बड़े लोग हैं, आप अपनी आमदनी का ढाई प्रतिशत इस काम के लिए दें। तब एक वकील ने कहा कि यह विचार उन्हें मान्य है। उनकी आमदनी दो हजार रुपये है, उसका ढाई प्रतिशत यानी ५० रुपये वे देंगे। कोई भी कबूल करेगा कि दो हजार मासिक प्राप्तिवाले मनुष्य को ५० रुपये देना भार नहीं होगा। अगर आप लोग यह स्वीकार करें तो जितने लोग यहाँ आये हैं, उतने संकल्प-पत्र पर हस्ताक्षर देकर जायँ। हम किसीकी आमदनी कितनी है, यह तलाश नहीं करेंगे। जिस मनुष्य ने हमको दो हजार आमदनी बताया, उसने अगर एक हजार बताया होता तो हम मान लेते, तलाश नहीं करते। अगर आप यह करते हैं तो अभी नाम सुनाने में समय व्यर्थ गया, ऐसा हमने कहा, उसके बदले में समय सार्थक हो जायेगा—प्रेम की वृद्धि में और अर्थशास्त्र की वृद्धि में भी।

अम्बिकापुर : ता० १७–११–'६८।

पठनीय **नयी तालीम** मननीय
शैक्षिक क्रांति का अग्रदूत मासिकी
वार्षिक मूल्य : ६ रु०
सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी–१

www.vinoba.in

सम्पादकीय

हंगामे की राजनीति और भारत से अपेक्षा

देश की राजधानी दिल्ली में जब संसद का अधिवेशन शुरू होता है, तो अखबारी दुनिया में रौनक आ जाती है। पृष्ठ-के-पृष्ठ भरे रहते हैं संसद की चटपटी बातों से। जो संसद भारतीय नागरिकों के लिए लोकतांत्रिक श्रद्धा, आशा और निष्ठा की प्रतीक होनी चाहिए, ऐसा लगता है कि वह एक नाट्यशाला मात्र बनकर रह जाती है!

पिछले ११ नवम्बर को जब संसद का शरद्कालीन अधिवेशन शुरू हुआ तो इन्दिरा-सरकार के खिलाफ पेश किये गये अविश्वास प्रस्ताव पर हुई दो दिनों की बहस के बाद तीसरे दिन जब प्रधानमंत्री ने अपना स्पष्टीकरण पेश करना चाहा तो सदन में इतना हंगामा मचा कि उन्हें मौन साध लेना पड़ा। विरोधी सदस्यों की एक ही मांग थी कि प्रधानमंत्री दो टूक आश्वासन दें, जब कि प्रधानमंत्री इसके पूर्व कुछ महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण पेश करना चाहती थीं। बहस में मुख्य विषय केन्द्रीय कर्मचारियों की हड़ताल थी।

लोकतंत्र में जन-प्रतिनिधि जन-भावना को व्यक्त करनेवाले माने जाते हैं। मौजूदा लोकतंत्रीय व्यवस्था में विरोधी सदस्यों का सरकार द्वारा की गयी कार्रवाइयों पर अपना मत और विरोध प्रकट करना स्वस्थ लोकतंत्रीय परम्पराओं में ही गिना जाता है। लेकिन अगर विरोधी या सरकारी, किसी भी ओर से किसी भी प्रतिनिधि को बहस के दौरान 'मन की बात मन में' ही रहने देने को विवश किया जाय, और वह भी सदन में हंगामा करके, तो इसे संसद् को, और लोकतंत्रीय परम्पराओं को दुर्बल बनानेवाला कदम ही माना जायेगा। देश की जनता जहां से सही नेतृत्व, मार्गदर्शन और समाधानकारी भविष्य के निर्माण की आशा लगाये बैठी है, वहां जब इस तरह के करिश्मे होते हैं, तो देश के हर जागरूक नागरिक के लिए यह एक गहन चिन्ता का विषय हो जाता है।

तब क्या यह माना जाय कि देश की सत्तात्मक राजनीति देश की गम्भीर और खतरनाक परिस्थिति की ओर से शुतुरमुर्ग की तरह विमुख रहकर जनता को भरमानेवाले कुछ प्रहसन पेश करके अपना कर्तव्य पूरा कर दे रही है?

२५ नवम्बर को एक प्रश्न का जवाब देते हुए उपप्रधान मंत्री श्री मुरारजी देसाई ने यह आश्वासन दिया कि विदेशी सहायता की अनिश्चितता के कारण चतुर्थ पंचवर्षीय योजना स्थगित नहीं की जायेगी। उन्होंने कहा कि योजना जनवरी '६९ तक तैयार हो जायेगी, और भारत में मौजूद आन्तरिक साधनों के आधार पर विकास के कार्यक्रम तैयार किये जायेंगे।

अभी तीन योजनाओं का जायका हम ले चुके हैं, जिसके बदले भारत को हर साल १६१ करोड़ रुपये सिर्फ सूद में विदेशी महाजनों को देने पड़ रहे हैं। भारत की विकासोन्मुख योजना के परिणाम-स्वरूप देश विदेशों का कर्जदार और जनता सरकार की कर्जदार बन गयी है। क्या इसका कारण यह नहीं है कि हमारी विकास की योजना पूँजी-केन्द्रित है, और पश्चिम के साहूकार देश हमारी प्रेरणा के आदर्श-केन्द्र?...कि हजारों वर्षों की गुलामी के कारण हीन-भावना से ग्रस्त भारत अपनी अन्तरनिहित पूँजी और शक्ति की ओर ताकने में भी शर्माता है?···कि उसके लिए पश्चिम प्रगति का पैगम्बर बन बैठा है?

आखिर इन सत्वहीन, सत्तात्मक राजनीति और आत्महीन विकास की योजनाओं से हम कब तक छले जाते रहेंगे?

भारत की आत्मा कभी भी सत्ता में नहीं रही है, और न शक्ति ही कभी सत्ताधीशों में केन्द्रित रही है। भारत तो अपनी जीवनी-शक्ति प्राप्त करने के लिए हमेशा दर्शन के स्तर पर संघर्षशील रहा है। इसलिए विनोबा बार-बार इस बात को दुहराते हैं कि भारत को बनाया है यहाँ के महान् सन्तों ने, विचारकों ने। भारत जिन्दा रहा है तो यहाँ की सत्तोन्मुख नहीं, बल्कि आत्मोन्मुख जनता की अखण्ड जीवनी-शक्ति से।

विनोबा स्वयं एक सन्त हैं, इसलिए उनके द्वारा इस तरह की बातें कहीं जायँ, तो यह सहज ही है, लेकिन आश्चर्य तो तब होता है जब हम जिन्हें अपना पैगम्बर मान बैठे हैं, उनमें से ही यदाकदा कोई अपनी सीमाओं को पहचानकर भारत की आन्तरिक असीमता की ओर आकर्षित होता है।

पिछले दिनों दुनिया के राजनीतिक मंच पर जो कुछ विशेष घटनाएँ हुई हैं, उनमें मेक्सिको के भारत-स्थित राजदूत श्री आक्टोवियो पॉज का अपनी सरकार की छात्रदमन-नीति के विरोध में दिया गया त्यागपत्र (–या मुक्ति पत्र?) महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पॉज इन दिनों विश्व की विद्रोही चेतना के प्रतीक-से बने गये हैं; ऐसा कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा। पिछले दिनों दिल्ली से विदा होने से पूर्व एक भेंट-वार्ता में पॉज ने भारत के प्रति जो अपेक्षा व्यक्त की वह ध्यान देने लायक है। सम्भव है कि भारत के तथाकथित बुद्धि-जीवी लोगों—जिन्हें पॉज ने राजनेताओं का दास कहा है—का ध्यान इधर जाय।

एक प्रश्न के उत्तर में पॉज ने कहा है कि "पश्चिम की समस्त राजनीतिक क्रान्तियाँ, चाहे वे पूँजीवाद की हो, या साम्यवाद की, अन्ततः नौकरशाही राजतंत्र बनकर रह गयी हैं।···लेनिन की संतानें चेकोस्लोवाकिया में अपने टैंक लेकर जाती हैं, और लिंकन के उत्तराधिकारी विएतनाम पर अनन्त काल तक बमबारी करते-से जान पड़ते हैं।···भारत यदि भुखमरी के कगार पर खड़ा है तो पश्चिम परमाणु बमों के ढेर पर खड़ा हुआ है। इसलिए पश्चिमी सभ्यता का वह गर्व झूठा है कि उसने इतिहास के प्रश्नों को सुलझा लिया है। प्रश्न सुलझाने के बजाय उलझ गये हैं।" पॉज का कहना है कि, "विश्व-सभ्यताओं में भारत का अनोखा स्थान रहा है। उसने अपने दर्शन से संसार का पथप्रदर्शन किया है। लेकिन भारत राजनीतिक अर्थों में कभी भी महान् सत्ता नहीं रहा—→

www.vinoba.in

राजस्थान

प्रदेशदान-अभियान की दिशा में प्रथम चरण

अभियान-कार्यकारिणी के महत्त्वपूर्ण निर्णय

राजस्थान ग्रामदान अभियान समिति की कार्यसमिति की प्रथम बैठक में यह निर्णय किया गया कि दिसम्बर अन्त तक राजस्थान की समस्त ग्राम-पंचायतों तक पहुँचना कठिन होगा, परन्तु इस काल में राज्य की समस्त २३२ पंचायत-समितियों से सम्पर्क साधकर वहाँ "ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य" का संदेश पहुँचाकर प्रदेशदान के समर्थन में प्रस्ताव पास करवाने का पूर्ण प्रयत्न किया जाय जिससे कि प्रान्त में सर्वोदय सम्मेलन से पूर्व प्रदेशदान के लिए अनुकूल वातावरण बन सके। उक्त बैठक १७ नवम्बर को जयपुर में हुई थी।

इस कार्य के लिए विभिन्न जिलों से संपर्क करने की जिम्मेदारी विभिन्न साथियों ने ली। ये लोग यह भी प्रयत्न करेंगे कि प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन के समय राजस्थान के सब जिलों से ग्रामदान-प्रेमियों का अच्छा दल जयपुर पहुँचे और जिले में इस अभियान के निमित्त अर्थसंग्रह व कार्यकर्ता-प्राप्ति का प्रयत्न भी चालू हो जाय।

दूसरा निर्णय यह लिया गया कि ग्रामदान के लिए प्रदेश में वातावरण बनाने की दृष्टि से विविध क्षेत्रों के राजस्थान के प्रमुख लोगों के हस्ताक्षरों से युक्त एक अपील इस अभियान के समर्थन व सहयोग के लिए प्रसारित की जाय और उसे सारे प्रदेश में प्रचारित किया जाय।

यह भी तय रहा कि सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर प्रदेशदान के संकल्प की घोषणा कुछ प्रखंडदानों के साथ की जाय। अतः दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह के पूर्व तक कुछ प्रखंडों में ग्रामदान का कार्य पूर्ण हो जाय इस दृष्टि से नीम का थाना, चाकसू, सिरोही व डूंगरपुर क्षेत्रों में कार्य किया जाना चाहिए।

प्रदेशदान अभियान के लिए अर्थ-संग्रह की दृष्टि से सोचा गया कि अन्य सूत्रों से माँगने से पूर्व प्रदेश के कार्यकर्ता-जगत् को इस कोष में अपना हविर्भाग सर्वप्रथम देना चाहिए। जो कार्यकर्ता इसको मानते हैं उनको अपनी आय का कुछ अंश अनिवार्यतः नियमित रूप से देना प्रारम्भ कर देना चाहिए। वह अंश क्या हो इसके लिए विभिन्न सुझाव बैठक में प्रस्तुत किये गये, यथा--प्रति मास एक रुपया, अथवा माह में एक दिन का वेतन।

बैठक में यह भी सोचा गया कि प्रदेशदान अभियान के सन्दर्भ में ग्रामदान अभियान सम्बन्धी काफी साहित्य की आवश्यकता होगी। हाल ही में वाराणसी में जो ग्रामदान-गोष्ठी हुई थी उसका सार छपवाकर लाखों की तादाद में बाँटे जाने की भी आवश्यकता है। कुछ 'ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य' सम्बन्धी पोस्टर्स आवश्यक होंगे। इस सब सामग्री के प्रकाशन के लिए गांधी-शताब्दी समिति की रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति से निवेदन करने का तय रहा।

बैठक में यह तय रहा कि सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर श्री जयप्रकाश नारायणजी की उपस्थिति का लाभ उठाने के लिए पंचों व सरपंचों का एक सम्मेलन भी बुलाने का प्रयत्न किया जाय।•

श्री केलप्पन द्वारा केरल में सत्याग्रह

केरल के पालघाट जिलान्तर्गत अंगादीपुरम् के ताली-मन्दिर पर राज्य सरकार द्वारा विगत १६ नवम्बर '६८ को लगाये गये प्रतिबन्ध के खिलाफ श्री के० केलप्पन के नेतृत्व में स्थानीय जनता ने १७ नवम्बर को सत्याग्रह शुरू किया। श्री केलप्पन ने इस प्रतिबन्ध को 'पूजा पर प्रतिबन्ध' मानकर इसका विरोध किया। उसी दिन सत्याग्रही जत्थे सहित श्री केलप्पन पुलिस द्वारा हिरासत में ले लिये गये, और बाद में छोड़ दिये गये। सत्याग्रह जारी रहा। पुनः २४ तारीख को पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया और तब से श्री केलप्पन ने उपवास भी शुरू कर दिया। उनका कहना था कि मन्दिर में पूजा का प्रतिबन्ध समाप्त होने और वहाँ जाकर पूजा करने के बाद ही वे उपवास तोड़ेंगे।

खुशी की बात है कि २५ नवम्बर '६८ को श्री थाकरन् की याचिका के ऊपर फैसला देते हुए पेरीन्तल्मन्ना मुन्सिफ कोर्ट ने आगामी ३ दिसम्बर '६८ तक के लिए राज्य पुलिस द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध को समाप्त कर दिया। श्री केलप्पन ने उसी दिन उपवास तोड़ दिया और अपार जन समूह के साथ मन्दिर में जाकर प्रार्थना की।•

एक सराहनीय प्रयास

गांधी जन्म-शताब्दी के उपलक्ष में दि० ३०-१०-'६८ से ७-११-'६८ तक श्री गांधी आश्रम, बन्नादेवी, अलीगढ़ में खादी-ग्रामोद्योग एवं सर्वोदय-साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन अलीगढ़ मुसलिम यूनिवर्सिटी के उपकुलपति डा० अब्दुल अलीम के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवधि में कुल १६,५०० रु० की बिक्री हुई।

है। वह हमेशा विचारों के स्तर पर जीवित रहा है।...अब तो महान् राज्य बनने का कोई अर्थ ही नहीं रह गया है। भारत चाहकर भी महान् राज्य नहीं बन सकता, इसके लिए अब बहुत देर हो चुकी है, लेकिन अगर वह महान् राज्य बन भी जाता तो क्या हो जाता?" शायद इसी निष्कर्ष के आधार पर पॉल की अपेक्षा है कि,..."आज हमें एक ऐसी विश्व-सभ्यता की आवश्यकता है, जो वैज्ञानिक आकांक्षा और कविता (दर्शन - सं०) के आन्तरिक अनुशासन का समन्वय हो। यह संभावना मुझे केवल भारत में ही नजर आती है। हो सकता है कि इसमें सौ साल लग जायँ। मगर भविष्य के लिए दृष्टि शायद भारत से ही मिल सकती है।"

यह दृष्टि भारत हंगामे की राजनीति और कर्जे की विकास-नीति को अपनाकर कभी नहीं दे सकता, यह तय है। इसके लिए हमें उपप्रधान मंत्री के कथ्यानुसार, लेकिन बिलकुल भिन्न सन्दर्भ में, अपनी आन्तरिक शक्तियों का आधार लेना पड़ेगा—विचार की शक्ति और जनसहकार की शक्ति का। और इन दोनों शक्तियों के लिए घातक सत्तोन्मुख राजनीति और कर्जोन्मुख विकास-नीति से विमुख होना पड़ेगा। ग्रामदान आन्दोलन को इस दिशा में पहल करनी है!•

www.vinoba.in

शहरी लोगों को ग्रामदान-आन्दोलन में शामिल होने का आह्वान

मध्यप्रदेश कार्यकर्ता-सम्मेलन द्वारा पूरी शक्ति और भक्ति से प्रदेशदान का संकल्प पूरा करने की अपील

विनोबाजी ने बिहार से मध्यप्रदेश के सरगुजा जिले में सात दिनों के लिए गत १५ नवम्बर को प्रवेश किया। रामानुजगंज में वहाँ की जनता, शासकीय अधिकारी तथा प्रदेश के कोने-कोने से आये रचनात्मक कार्यकर्ता कनहर के तट पर विनोबाजी का स्वागत करने के लिए खड़े थे। मध्यप्रदेश शासन की ओर से आदिवासी विभाग के राज्यमंत्री भी उपस्थित थे। विनोबाजी का स्वागत जिले की जनता की ओर से श्री फूलचन्द सापुरिका, अध्यक्ष जिला स्वागत-समिति ने किया। विनोबाजी को राजपुर में वार्डफनगर और सीतापुर, दो प्रखण्डदान भेंट किये गये।

सरगुजा जिलादान का संकल्प २६ जनवरी, १९६९ तक शासकीय अधिकारियों और कार्यकर्ताओं के मिले-जुले प्रयास से पूरा करने का तय हुआ। २ दिसम्बर १९६८ तक सरगुजा जिले के ७ प्रखण्ड ग्रामदान में लाने का निश्चय उत्साह और उमंग भरे वातावरण में रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने किया। इसको पूरा करने के लिए प्रदेश के ५० कार्यकर्ता २ दिसम्बर १९६८ तक विनोबाजी की कैद स्वीकार करके अपनी पूरी शक्ति और भक्ति से लग गये। इसमें मध्यप्रदेश गांधी-निधि के कार्यकर्ता मुख्य रूप से सम्मिलित हैं।

रामचन्द्रपुर तहसील के वार्डफनगर और रामानुजगंज प्रखण्डदान पूरे हो चुके हैं। अब तीसरा, बलरामपुर प्रखण्ड पूरा होने पर समूची तहसील ग्रामदान में आ जायगी।

विनोबाजी का पड़ाव १७ से १९ नवम्बर तक अंबिकापुर में रहा। अम्बिकापुर में १८-१९ को छत्तीसगढ़ में गांधी-शताब्दी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन गांधी-शताब्दी की राज्य-स्तरीय समिति ने किया। इसमें छत्तीसगढ़ क्षेत्र के रायपुर, दुर्ग, बस्तर, रायगढ़, बिलासपुर और सरगुजा जिलों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त प्रदेश के रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधि और कुछ प्रमुख कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। विनोबाजी के सान्निध्य में भावी कार्यक्रम पर गहराई से चर्चा हुई। विनोबाजी के आवाहन पर छत्तीसगढ़ क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने १८ अप्रैल १९६९ तक समूचे छत्तीसगढ़दान का संकल्प किया है। उसकी व्यूह-रचना की जा रही है।

अम्बिकापुर में विनोबाजी के सान्निध्य में महिला बाल-कल्याण उपसमिति की ओर से छत्तीसगढ़ महिला-शिविर का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य रूप से अम्बिकापुर शहर की महिलाओं ने भाग लिया। विनोबाजी ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा, ये दो कार्यक्रम उठाने चाहिए। ये महिलाओं के लिए अत्यन्त महत्व के कार्यक्रम हैं। आज देश में अत्यन्त अश्लील साहित्य निकल रहे हैं। उसको रोकने के लिए महिलाओं को आगे आना चाहिए; शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा के सम्बन्ध में विविध कार्यक्रम सोचे गये।

सर्वोदय आन्दोलन के लिए अपनी आमदनी का ढाई प्रतिशत प्रतिमाह नियमित रूप से देने की अपील विनोबाजी ने यहाँ के व्यवसायियों, शासकीय विभागों में लगे सेवकों, वकीलों, डाक्टरों, शिक्षकों तथा श्रमिकों से की। इस अपील का सर्वत्र स्वागत हो रहा है। ग्रामदान के अन्तर्गत अपनी आमदनी का चालीसवाँ भाग किसानों से लिया जाता है। उसी प्रकार विनोबाजी की इस ढाई प्रतिशत की माँग से शहरी नागरिकों के लिए ग्रामदान-आन्दोलन में शामिल होने का नया आयाम प्रकट हुआ है और इस पर वे बहुत जोर दे रहे हैं। विनोबाजी ने अपेक्षा व्यक्त की है कि इस कार्यक्रम को अधिकाधिक व्यापक बनाया जाय।

अम्बिकापुर में विनोबाजी को पश्चिम निमाड़ जिले की बड़वानी, मिकनगाँव दो तहसील-दान भेंट किये गये, जिसमें ४ प्रखण्ड हैं। प० निमाड़ जिले में गत ११ सितम्बर से जिलादान-अभियान चलाया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत १,७३८ गाँवों में से १,३२२ गाँव ग्रामदान में आ चुके हैं। निकट भविष्य में शेष गाँव भी ग्रामदान के अन्तर्गत आ जायेंगे, ऐसी उम्मीद है। फरवरी के दूसरे सप्ताह में श्री जयप्रकाशजी ने प० निमाड़ जिलादान-समर्पण-समारोह में भाग लेने की स्वीकृति दे दी है।

विनोबाजी की इस साप्ताहिक यात्रा के दौरान मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल की बैठकें विभिन्न पड़ावों पर समय-समय पर होती रहीं, जिनमें मुख्य रूप से राज्य-स्तरीय गांधी-शताब्दी समिति द्वारा गत २६ अक्तूबर को भोपाल में आयोजित प्रथम मध्यप्रदेश गांधी-शताब्दी सम्मेलन में स्वीकृत प्रदेशदान के संकल्प का हार्दिक स्वागत और समर्थन करते हुए पूरी शक्ति और भक्ति के साथ उसके लिए जुट जाने का प्रस्ताव विधिवत पारित किया गया, और इसी प्रकार प्रदेश की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं की शक्ति भी शताब्दी-वर्ष में प्रदेशदान को सफल बनाने में लगे, यह अपेक्षा प्रकट की गयी। इसके लिए शताब्दी-समिति ने निम्न व्यूह-रचना की है :

(१) प्रदेश के सातों संभागों में संभागीय शताब्दी-सम्मेलनों के आयोजन द्वारा उपयुक्त वातावरण बनाया जाय। इसका पहला सम्मेलन विनोबाजी के सान्निध्य में अंबिकापुर में संपन्न हुआ।

(२) जिला-स्तर पर ग्रामदान-शिविर एवं अभियान के प्रशिक्षण हेतु भी शताब्दी-समिति की ओर से एक योजना बनायी गयी है। प्रदेश के ४३ जिलों में लगनेवाले इन शिविरों में ग्रामसेवक, जिला-अधिकारी, शिक्षक तथा अन्य कुछ लोग भाग लेंगे।

अंबिकापुर शहर से ३ मील दूर, राघवपुरी आश्रम में १९ तारीख को विनोबाजी कुछ घंटों के लिए गये। राघवपुरी की स्थापना सन् १९५८ में स्व० बाबा राघवदासजी की स्मृति में हुई। राघवपुरी आश्रम के माध्यम

से सरगुजा जिले में आदिवासी कल्याण के विविध कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। राघवपुरी में विनोबाजी ने स्व० बाबा राघवदासजी का पुण्य-स्मरण किया और भावविभोर हो उठे!

www.vinoba.in

विनोबाजी ने जिले की आदिवासी आध्यात्मिक नेता राजमोहिनी देवी के निमंत्रण पर उनके 'भगतगणों' से मिलने के लिए अंबिकापुर से ३ मील दूर, सरगवाँ गाँव भी गये। वहाँ पर 'भगतगणों' ने बाबा का हार्दिक स्वागत किया। विनोबाजी ने आदिवासियों को शराब से मुक्त होने का आवाहन किया।

सरगुजा की अपनी यात्रा को विनोबाजी ने ऋण-अदायगी-यात्रा माना और इसका उल्लेख भी उन्होंने अपने व्याख्यानों में किया। विनोबाजी ने राजमोहिनी देवी को वादा किया था कि जब संभव होगा सरगुजा की यात्रा करेंगे। उन्होंने इस प्रेम-यात्रा के कारण कई अपवाद भी किये, और अंबिकापुर की एक सभा में ७१ मिनट तक लगातार बोलते रहे।

मध्यप्रदेश में अब तक ३ भूदान-बोर्ड कार्यरत हैं, जिनका विधानसभा द्वारा विलीनीकरण ऐक्ट पारित हुआ है, जिसके अनुसार पूरे प्रदेश के लिए एक नये बोर्ड का गठन किया जा रहा है। उसका मुख्यालय भोपाल में रहेगा।

विनोबाजी की सरगुजा-यात्रा की व्यवस्था जिला विनोबा-स्वागत-समिति ने किया था। जनता ट्रान्सपोर्ट कंपनी ने कार्यकर्ताओं के आवागमन की निःशुल्क व्यवस्था कर उल्लेखनीय योगदान किया। जिले की जनता तथा मध्यप्रदेश-शासन का सहयोग भी सराहनीय रहा।

इस तरह विनोबाजी की साप्ताहिक यात्रा से प्रेरणा लेकर कार्यकर्ता श्रद्धा और विश्वास के साथ बिना हारे, बिना थके अपना संकल्प पूरा करने में जुट गये हैं।

— गायत्री प्रसाद

गांधी-शताब्दी वर्ष १९६८-६९

गांधी-विनोबा के ग्राम-स्वराज्य का संदेश गाँव-गाँव, घर-घर
पहुँचाने के लिए निम्न सामग्री का उपयोग कीजिए :

पुस्तकें—

१. **जनता का राज** : लेखक—श्री मनमोहन चौधरी, पृष्ठ ६२, मूल्य २५ पैसे
२. **Freedom for the Masses** : लेखक—श्री मनमोहन चौधरी : 'जनता का राज' का अनुवाद, पृष्ठ ७६, मूल्य २५ पैसे
३. **शांति-सेना परिचय** : लेखक—श्री नारायण देसाई, पृष्ठ ११८, मूल्य ७५ पैसे
४. **हत्या एक आकार की** : लेखक—श्री ललित सहगल, पृष्ठ ९६, मूल्य ३ रु० ५० पैसे
५. **A Great Society of Small Communities** : ले० सुगत दासगुप्ता, पृष्ठ ७८, मूल्य १० रु०

फोल्डर—

१. गांधी : गाँव और ग्रामदान
२. गांधी : गाँव और शांति
३. ग्रामदान : क्यों और कैसे ?
४. ग्रामदान : क्या और क्यों ?
५. ग्रामदान के बाद क्या ?
६. ग्रामसभा का गठन और कार्य
७. गाँव-गाँव में खादी
८. सुलभ ग्रामदान
९. देखिए : ग्रामदान के कुछ नमूने
१०. गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम

पोस्टर—

१. गांधी ने चाहा था : सच्चा स्वराज्य
२. गांधी ने चाहा था : स्वावलम्बन
३. गांधी ने चाहा था : अहिंसक समाज
४. ग्रामदान से क्या होगा ?
५. गांधी जन्म-शताब्दी और सर्वोदय-पर्व

प्रदेश के सर्वोदय-संगठनों और गांधी जन्म-शताब्दी समितियों से सम्पर्क करके यह सामग्री हजारों-लाखों की तादाद में प्रकाशित, वितरित कराने का प्रयत्न करना चाहिए।

शताब्दी-समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति, टुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरों, जयपुर—३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

परिवर्तन की स्वीकृति

(कार्य-पद्धति और वैचारिक परिवर्तन का एक अध्ययन)

[हाथल की ग्रामसभा के तथ्यपूर्ण अध्ययन का यह क्रम इस चौथी किश्त में पूरा हो रहा है। यह अध्ययन जहाँ एक ओर ग्रामदान के विचारों की व्यावहारिकता को लेकर उठने और उठाये जानेवाली शंकाओं का निराकरण प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर अपनी समस्याओं को हल करने के लिए गाँव में ही छिपी हुई शक्ति के स्रोतों की ओर स्पष्ट संकेत भी करता है। —सं०]

ग्रामदान का क्या तात्पर्य है, इस प्रश्न के उत्तर में जो मन्तव्य प्राप्त हुए, उनसे ग्रामदान की वैचारिक पकड़ का और व्यावहारिकता का अन्दाज लगाया जा सकता है :

ग्रामदान का तात्पर्य

(साक्षात्कार-संख्या—३०)

वक्तव्य	संख्या
• स्वामित्व-विसर्जन होता है, जमीन सबकी है।	२९
• सामूहिक शक्ति बनती है।	२४
• ग्रामसभा बनती है, जिसके द्वारा हम अपनी समस्याएँ स्वयं सुलझाते हैं।	२८
• गरीबों को जमीन मिलती है, जिससे उनका आर्थिक विकास होता है।	३०
• चरागाह, कुएँ, जंगल आदि को सुरक्षा मिलती है।	२४
• उद्योगों का विकास होता है।	१५
• सरकारी कर्मचारियों से मुक्ति मिलती है।	२६
• ग्रामकोष से गाँव की पूँजी बनती है।	२४
• ग्रामसभा सबके हित में काम करती है।	१८

यहाँ साफ जाहिर है कि गाँववाले प्रत्यक्ष लाभ को देखते हुए ग्रामदान का अर्थ समझते हैं। ग्रामदान के बाद चरागाह, जंगल, भूमि-प्राप्ति आदि से प्रत्यक्ष लाभ उनको दिखता है, अतः उनके लिए वही ग्रामदान का अर्थ है। परन्तु व्यक्त मन्तव्य से साफ जाहिर है कि स्वामित्व-विसर्जन, ग्रामसभा, ग्रामकोष एवं सर्वहित के लाभ को अधिकांश वक्ताओं ने स्वीकार किया है।

प्रत्यक्ष पूछताछ से स्पष्ट होता है कि हाथल में जो भी प्रगति ग्रामसभा की कार्य-पद्धति एवं विचार-परिवर्तन के क्षेत्र में हुई है उसका प्रत्यक्ष लाभ सब लोग महसूस करते हैं। ग्रामसभा की कार्य-पद्धति ने एक रास्ता पकड़ लिया है और उसी रास्ते पर वह चल रही है। फिर भी जो भी प्रगति हुई, उसके कुछ कारण अवश्य हैं, जो कि अन्य गाँवों में नहीं हैं। वे कारण इस रूप में व्यक्त किये जा सकते हैं :

(१) ऐतिहासिक रूप से व्यक्तिगत स्वामित्व का न होना।

(२) पास-पड़ोस के व्यक्तिगत भूमि-स्वामित्व की परेशानियों से परिचित होना।

(३) श्री गोकुलभाई भट्ट द्वारा विचार-प्रचार एवं गाँव के सदस्य के रूप में प्रत्यक्ष सहयोग करना।

(४) परम्परा से विभिन्न जातियों में सौम्य वातावरण का होना।

(५) एक ही जाति—ब्राह्मण—का बोल-बाला होना और बाद में अन्य जातियों की जागृति, अधिकार की माँग, सामाजिक शोषण को अस्वीकार करने की माँग को ब्राह्मणों द्वारा सहजता से स्वीकार किया जाना।

(६) दलगत राजनीति से मुक्त रहना।

(७) कुछ सक्रिय लोगों का आगे आ जाना।

उक्त कारणों से हाथल की ग्रामसभा ठीक ढंग से चल रही है, ऐसा माना जा सकता है। ब्राह्मण-प्रधान गाँव होने से सामाजिक भेद था और आज भी है। परन्तु बदलती परिस्थितियों को देखकर अन्य जातियों की स्वतंत्रता एवं जागृति को ब्राह्मणों ने सहज स्वीकारा है, जिससे किसी प्रकार का संघर्ष नहीं हो पाया। अब ब्राह्मणों के समान ही ग्रामसभा में उनका भी समान स्थान है। समानता की इस स्वीकृति में वृद्धजनों को संस्कारगत कष्ट अवश्य हुए, पर हकीकत समझकर उन्होंने भी मान लिया। फिर आर्थिक क्रियाओं के क्षेत्र में पहले से ही यहाँ ब्राह्मण एवं गैरब्राह्मण समान थे। सभी जाति के लोग एकसाथ खेत में काम करते थे, करते हैं। ब्राह्मण-हरिजन, सभी मजदूरी तक करते थे, आज भी करते हैं। ब्राह्मणों की प्रतिष्ठित महिलाएँ भी हरिजनों के साथ खेत में काम करती हैं। पर हाँ, घर आने पर वह आज भी अपने को ब्राह्मण मानती हैं, और उनके हाथ का पानी पीने में संकोच करती हैं। पर यह भी धीरे-धीरे कम हो रहा है। जो लोग गाँव के बाहर रहते हैं उनकी संख्या काफी है। करीब ५०० लोग बाहर रहते हैं। उनके द्वारा भी इस भेदभाव को मिटाने में योग ही मिला है। इस बदलती परिस्थिति में ग्रामदान ने गाँव को वैचारिक दिशा दी है, ऐसा गाँववाले महसूस करते हैं।

हाथल के कुछ आँकड़े

जाति-संरचना

जाति	परिवार	प्रतिशत
ब्राह्मण —	१९८	७१
बढ़ई —	५	१.७८
माली —	९	३.११
लुहार —	५	१.७८
कुम्भार —	१०	३.५०
हरिजन (चमार)	४५	१६
सरगड़े —	५	१.६८
नाई —	२	०.७०
भंगी —	१	०.३५
कुल :	२८०	

कुल जन-संख्या १४२४। काम करने लायक ७००।

भूमि	बीघा
सिंचित जिस पर खेती होती है।	१२९०
असिंचित "	३५३०
चरागाह	७९१½
परती	४०३½
बंजर	३९०½

www.vinoba.in

नागपुर में अपूर्व शान्ति-यात्रा

महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में कृषि विद्यापीठ स्थापित हो, इस मांग को लेकर गत-अगस्त सितम्बर माह में उग्र आंदोलन हुए। लाखों रुपये की संपत्ति नष्ट हुई और पांच जाने गयीं, सैकड़ों को जेल भेजा गया। इस तरह हिंसक आन्दोलनों से सामान्य जनता और सरकार भी परेशान हुई। १८ नवम्बर को नागपुर में विधान सभा की बैठक के समय आन्दोलन न भड़के, इसलिए शहर के प्रमुख नागरिकों, सब धर्मों और पक्षों के नेताओं और आन्दोलनकारियों के सहयोग से सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने शान्ति-यात्रा का आयोजन १६ नवम्बर को किया। सर्व श्री दादा धर्माधिकारी, आर. के० पाटील आदि के मार्ग-दर्शन में लगभग ५०० नागरिक भाई बहनों ने शहर में पांच मील की मौन शान्ति-यात्रा के रूप में हिंसा के खिलाफ सफल प्रदर्शन किया। शान्ति-यात्रा की समाप्ति सभा में हुई। श्री आर० के० पाटील के संयोजकत्व में शान्ति-समिति का गठन हुआ, जो भविष्य में शान्ति बनाये रखने के कार्यक्रम आयोजित करेगी।

आजमगढ़ में चौथा प्रखण्डदान

आजमगढ़, २३ नवम्बर। उत्तर प्रदेश-दान के शुभ संकल्प में आजमगढ़ जिला सक्रिय रूप से लगा हुआ है। ११ नवम्बर से २१ नवम्बर '६८ तक के ग्रामदान-अभियान में हरैया ब्लाक का प्रखण्डदान ब्लाक-प्रमुख श्री रामदेव सिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस ब्लाक में १४० राजस्व गाँव थे, जिनमें से ११७ ग्रामदान घोषित हुए। प्रायः सभी प्रमुख एवं प्रभावशाली गाँव ग्रामदान की घोषणा में शामिल हैं। अब आजमगढ़ जिले में ७२३ ग्रामदान तथा ४ प्रखण्डदान हो चुके। दिसम्बर में मेंहनगर, तरवा आदि ब्लाकों के अभियान चलाने की पूर्वतैयारी हो रही है। —श्रीनिवास राय

पुरुलिया में प्रखण्डदान

जिला सर्वोदय मण्डल, पुरुलिया (प० बंगाल) के संयोजक श्री सुनिलचन्द्र महतो से प्राप्त सूचनानुसार पुरुलिया जिले के मनालदा प्रखण्ड का दान घोषित हो गया है।

→ भूमि	बीघा
सड़क, पत्थर आदि	८१½
अन्य (मकान रास्ता आदि)	१७६६
कुल—	८२४२½

ग्राम-कोष

सन्	रकम
१९६३	१,४८८.४५
१९६४	१,९३३.४९
१९६५	१,१०१.७९
१९६६	२,९७९.४०
१९६७	१,१४८.०५
१९६८	७,१४७.१२
अबतक कुल—	१५,७९८.३०
अबतक व्यय—	३,१३७.६२
शेष	१२,६६०.६८

इसके अलावा सामूहिक खेती से जमा रकम ८९६ रु०।

जागीरदारी बाँड बेचने पर प्राप्त रकम १८,५२८ रु० बैंक में स्थायी खाता में जमा है। (समाप्त) —अवध प्रसाद

खादी और ग्रामोद्योग राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है

इनके सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए

खादी ग्रामोद्योग (मासिक) पढ़िये **जागृति** (पाक्षिक)

(संपादक—जगदीश नारायण वर्मा)

हिन्दी और अंग्रेजी में समानांतर प्रकाशित

प्रकाशन का चौदहवाँ वर्ष। विश्वस्त जानकारी के आधार पर ग्राम विकास की समस्याओं और सम्भाव्यताओं पर चर्चा करनेवाली पत्रिका। खादी और ग्रामोद्योग के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगीकरण की सम्भावनाओं तथा शहरीकरण के प्रसार पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम। ग्रामीण धंधों के उत्पादनों में उन्नत माध्यमिक तकनालाजी के संयोजन व अनुसंधान-कार्यों की जानकारी देनेवाली मासिक पत्रिका।

वार्षिक शुल्क : २ रुपये ५० पैसे
एक अंक : २५ पैसे

प्रकाशन का बारहवाँ वर्ष। खादी और ग्रामोद्योग कार्यक्रमों सम्बन्धी ताजे समाचार तथा ग्रामीण योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देनेवाला समाचार पाक्षिक। ग्राम-विकास की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करनेवाला समाचार-पत्र। गाँवों में उन्नति से सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम।

वार्षिक शुल्क : ४ रुपये
एक प्रति : ३० पैसे

अंक-प्राप्ति के लिए लिखें

"प्रचार निर्देशालय"

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन, 'ग्रामोदय'

इर्ला रोड, विलेपार्ले (पश्चिम), बम्बई-५६ एएस

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

,'भूदान-यज्ञ" २ दिसम्बर, '६८ के अंक का परिशिष्ट
www.vinoba.in

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम् । – ऋग्वेद
इस गाँव में स्वस्थ और परिपुष्ट विश्व का दर्शन हो !
विनोबा का जय जगत्

इस अंक में

किसी एक दल की सरकार नहीं, सबकी सरकार
मिलकर राह खोजनी है !
सुखिया
चोरी नहीं, चालाकी
जहाँ की तहाँ
प्रधान वजीर का चुनाव
सर्वोदय बनाम साम्यवाद
केला उगाइए और खाइए
गुरुजी की गुरुता : गणों की लघुता

२ दिसम्बर, '६८
वर्ष ३, अंक ८] [१८ पैसे

<u>मध्यावधि चुनाव :</u>

किसी एक दल की सरकार नहीं, सबकी सरकार

प्रश्न : जब आप सबसे अच्छे उम्मीदवार को वोट देने को कहते हैं तो क्या यह अच्छा नहीं होगा कि जिले-जिले में सर्वोदय के लोग छान-बीनकर घोषणा कर दें कि किस क्षेत्र में वे किसे अच्छा समझते हैं ?

उत्तर : ऐसा करना बहुत बुरा होगा । चुनाव का अर्थ यह है कि वोट देनेवाला खुद तय करे कि वह किसे वोट देगा । तय करने में दो बातों का ध्यान रखना पड़ता है । एक यह कि कैसे आदमी को चुनें, दूसरी यह कि किस आदमी को चुनें । यह सलाह 'गाँव की बात' ने आपको दी भी है, कैसे आदमी को चुनें इस बारे में सलाह ली जा सकती है, लेकिन किस आदमी को चुनें, यह फैसला आपको खुद करना चाहिए । विद्यार्थी साल भर शिक्षक की मदद से किताब पढ़ता है, लेकिन परीक्षा में खुद सोचकर लिखता है । अगर वह परीक्षा में शिक्षक से पूछे, और शिक्षक चुपके से उसे बताने लगे, तो पूछनेवाला और बतानेवाला, दोनों बेईमान कहे जायेंगे । परीक्षा यह देखने के लिए होती है कि विद्यार्थी ने साल भर क्या पढ़ा ।

उम्मीदवार में क्या गुण होने चाहिए, यह साफ-साफ बता दिया गया है । आपका वोट ऐसे ही आदमी को मिलना चाहिए जिससे पूरे समाज का हित सधे । समाज और देश का भला होगा तो हमारा, आपका, सबका भला होगा । हर आदमी, हर जाति, हर दल, अलग-अलग अपनी बात सोचेगा तो अंत में किसीका भला नहीं होगा, और सबका नाश होगा ।

आप सर्वोदयवालों से यह माँग क्यों करते हैं कि वे आपको नाम बतायें ? क्या इसीलिए कि वे दलबन्दी से अलग हैं, निष्पक्ष हैं ? सोचिए, जो 'सर्व' का भला चाहेगा वह दलबन्दी में कैसे पड़ सकता है ? लेकिन समझ लीजिए कि जिस दिन सर्वोदय का कोई आदमी एक को अच्छा और दूसरे को बुरा बताने लगेगा उस दिन वह 'सर्व' का नहीं रह जायगा । तब वह पक्षपात का दोषी माना जायगा । पक्षपात से 'सर्व' का हित नहीं सधेगा ।

एक बात और है । किसीको 'सर्वोदयवाला' मत मानिए । ऐसा समझिए कि जो 'सर्व' की बात कहे वही सर्वोदय का है, चाहे वह किसी भी संस्था में हो, और कोई भी काम करता हो । विनोबाजी बराबर कहते हैं कि सरकार के आदमी भी सर्वोदय के हैं, क्योंकि वे बिना भेदभाव के सबकी सेवा करते हैं । इस परिभाषा के अनुसार क्या आप अपने को सर्वोदय का नहीं मानते ?

तो, सलाह चाहे जिससे लीजिए, लेकिन तय खुद कीजिए कि किस उम्मीदवार को वोट दीजिएगा । तय करने में न किसीका दबाव मानिए, न किसी पर दबाव डालिए, और वोट गुप्त दीजिए ।

प्रश्न : हम दल के उम्मीदवार को वोट न देकर अच्छे उम्मीदवार को वोट दें, ऐसी आपकी राय है । लेकिन बतलाइए, इतने दिनों के अनुभव के बाद यह भरोसा कैसे हो कि इन अच्छे लोगों की सरकार अब तक की सरकारों से अच्छी होगी ?

उत्तर : जरूर यह बात समझने लायक है । सचमुच अच्छी सरकार, जनता की सरकार, गाँव की सरकार, तो तब बनेगी जब तीन शर्तें पूरी होंगी । एक यह कि गाँव के लोग अपने गाँव

www.vinoba.in

की भीतरी व्यवस्था के लिए सरकार की मुहताजी छोड़ दें। जब देश की जनता अपनी सरकार के हाथों में अपने को पूरा-पूरा सौंप देती है, और रोटी-कपड़े के लिए भी सरकार की मुहताज हो जाती है, तो सरकार में चाहे जितने अच्छे लोग हों, अधिकार का नशा उन्हें भ्रष्ट कर देता है। दूसरी शर्त यह है कि गाँव-गाँव, शहर-शहर की जनता खुद तय करे कि उसके क्षेत्र से, उसकी ओर से, कौन आदमी असेम्बली-पार्लियामेण्ट में जायगा। उसका अपना प्रतिनिधि कौन होगा? अभी तो यह होता है कि उम्मीदवार होते हैं दलों के या 'स्वतंत्र', और उन्हींमें से आपको किसी एक को वोट देना पड़ता है। यह गलत है। होना यह चाहिए कि जिसका वोट हो उसका उम्मीदवार हो। तीसरी शर्त यह है कि समाज में सच्चरित्र, सेवाभावी, दलबन्दी से दूर रहनेवाले ऐसे सज्जनों की एक जमात रहनी चाहिए जो निडर होकर सच्ची बात कह सके—जनता से भी कह सके और सरकार में भी कह सके। जिस देश में निर्भय होकर सत्य कहनेवाले लोग नहीं होते उसकी सरकार भ्रष्ट और निरंकुश हो जाती है। आज गांधीजी-जैसा कौन है जो सत्ता का भय और सम्पत्ति का लोभ छोड़कर सत्य कहे; सत्य ही कहे, और कुछ न कहे! अगर नाम लें तो केवल दो नाम ले सकते हैं—एक विनोबाजी का, दूसरा जयप्रकाशजी का, जो निडर होकर वह बात कहते हैं जिसे वे सच समझते हैं। दूसरा हमारा बड़ा-से-बड़ा आदमी उस बात को कहता है जिसे उसका दल 'सत्य' मानता है। आप सोचें, किसी दल का सत्य पूरे देश का सत्य कैसे हो सकता है? इस वक्त हर दल का अपना सत्य अलग है, इसीलिए तो एक सत्य की दूसरे सत्य से लड़ाई हो रही है।

लेकिन आप कहेंगे कि ये शर्तें तुरन्त तो पूरी हो नहीं सकतीं। सही है, नहीं हो सकतीं। ग्रामदान गाँव-गाँव की जनता से यही कह रहा है कि अपने गाँव में एकता कायम करो, गाँव में अपनी स्वायत्त ग्रामसभा (या ग्राम-स्वराज्य सभा) बनाओ, और अगले आम चुनाव में अपने क्षेत्र से अपना उम्मीदवार खड़ा करो। ऐसा होने से तीनों शर्तों के लिए रास्ता खुल जायगा। लेकिन यह काम आगे करने का है।

फरवरी का चुनाव सिर पर है। उसमें दल, जाति आदि का ध्यान छोड़कर अच्छे उम्मीदवार को वोट देने को कहा जा रहा है। मान लीजिए कि उत्तर प्रदेश की विधान-सभा में अधिक ऐसे लोग चुन लिये जायँ जिन्हें इसलिए वोट मिला कि वे अच्छे थे, न कि इसलिए कि वे इस दल के थे, या उस दल के, भले ही चुने जानेवाले लोग अपने को अपने-अपने दल का मानते रहें। आप कहेंगे कि इस तरह सभी दल के कुछ लोग विधान-सभा में पहुँच जायेंगे, तो सरकार किसकी बनेगी? जाहिर है कि मिली-जुली सरकार बनेगी, चाहे कुछ दलों की बने या सब दलों की। ऐसी सरकार आपस में समझौते से काम करेगी।

अगर विधान-सभा के सब दलों के तथा निर्दलीय 'अच्छे' लोगों को मिलाकर सरकार बन जाय तो सबसे अच्छी बात होगी। वह 'सबकी सरकार' होगी। उसे सबका समर्थन मिलेगा, और हर वक्त टूटने का डर नहीं रहेगा। लेकिन अगर ऐसा न भी हो तो कम-से-कम इतना तो होगा कि ये अच्छे लोग दल-बदल नहीं करेंगे, भ्रष्टाचार में नहीं फँसेंगे, जो काम करेंगे जनता के हित का ध्यान रखकर करेंगे, जनमत का दबाव मानेंगे, और सोचेंगे कि आगे क्या कहकर जनता के सामने वोट के लिए जायेंगे। इससे भी बड़ी बात यह होगी कि एक बार जनता के दिल से दल निकल जाय तो आदमी की परख आदमी की हैसियत से होना शुरू हो जायगी। इसके अलावा दलवाद के खत्म होते ही जनता की शक्ति ऊपर आयेगी और चुनाव में से भ्रष्टाचार, जातिवाद, आदि के समाप्त होने का रास्ता खुल जायेगा। इतने वर्षों तक दलबन्दी के जहर को देख लेने के बाद अब तय कर लीजिए कि आगे भी दलबन्दी चलने देनी है या नहीं। अब यह पक्का मानिए कि या दल रहेंगे या देश। दोनों नहीं रह सकते।

दल का उम्मीदवार नहीं, अच्छा उम्मीदवार यह नये लोकतंत्र का पहला कदम है। आगे दूसरे का अच्छा उम्मीदवार भी नहीं, अपना उम्मीदवार, यह लोकतंत्र का अगला कदम है। पहला कदम अगले कदम के लिए रास्ता तैयार करेगा।•

मतदाता की मुसीबत

याद रखिए, वोट सबसे अच्छे उम्मीदवार
को ही देना चाहिए।
दल से मुक्ति होगी तो गाँव बनेगा, देश बचेगा।

मिलकर राह खोजनी है !

"शक्ति की उपासना के लिए 'बलिदान' चाहिए।···जब बलिदान का पुण्य हमें ही मिलनेवाला है तो हम पीछे क्यों रहेंगे ?"

···कहने को तो जोश में सब लोग उस रात की सभा में एकसाथ कह गये थे, लेकिन आज जब श्रीपालपुर के रामधनी बाबू की मौजूदगी में ग्रामदान की पूरी बात समझायी गयी, और ग्रामदान के कागज पर हस्ताक्षर करने की बात आयी तो एक बार सबके दिल में कँपकँपी पैदा हो गयी।

सबकी अलग-अलग मिल्कियत नहीं रह जायेगी, गाँव भर की जमीन का खाता एक हो जायेगा, जमीन की खरीद-बिक्री ग्रामसभा की राय से गाँव में ही की जा सकेगी ; ये सब बातें बाप-दादों के जमाने से चली आ रही परम्पराओं को तोड़नेवाली मालूम होती हैं। इससे बड़ी—शायद सबसे बड़ी—बात तो यह हो जायेगी कि जो छोटे-छोटे लोग बड़ों के सामने अब तक सिर नहीं उठा सकते थे, वे सबके साथ ग्रामसभा में बराबरी करने बैठेंगे। कैसे सहन होगा यह सब ?

सवाल सबके सामने विकट था। रामधनी बाबू ने समझाया : "गाँव की जमीन गाँव में ही रोक रखने की कोशिश नहीं की गयी तो पूरा गाँव भूमिहीनों का होकर रहनेवाला है। यह जमाना पैसे का हो गया है। दुनिया की सारी चीजें पैसे के जोर से खिचकर पैसेवालों के पास चली जा रही हैं। अगर सबने मिलकर जोर नहीं लगाया इसे रोकने में, तो क्षुद्र मोह में सबकी बड़ी हानि होनेवाली है। छोटे-छोटे और अलग-अलग स्वार्थ में फँसे रहेंगे तो सोना बह जायेगा और हम कोयले पर छापा मारते रह जायेंगे।

"···और जहाँ तक छोटे लोगों की बराबरी का सवाल है, तो भैया, जमाने का रुख पहचाननेवाला ही चतुर आदमी कहलाता है। जमाना यह है कि जो लोग अब तक गर्दनें नीची किये रहते थे, वे अब अपनी छाती 'उतान' करके चलने की कोशिश करने लगे हैं। बात यहीं तक रहती तो कोई हर्ज नहीं था, किसी तरह चल जाता। लेकिन ये छोटे लोग तरह-तरह के बहकावे में आकर मरने-मारने को उतारू हैं, और पुराने समय से अपने ऊपर हुए बड़े लोगों के अत्याचारों का बदला भी लेना चाहते हैं।

"···मूल बात यह है कि जो पुश्त-दर-पुश्त से एकसाथ रहते आये हैं, जिनका एक-दूसरे की मदद के बिना निभ नहीं सकता, उन सबका भला इसीमें है कि भेदभाव की दीवालें ढहाकर एक दिल हो जायँ, और प्रेमपूर्वक रहने के लायक गाँव का वातावरण तैयार करें।

"···शक्ति की उपासना के लिए बलि देनी है आपसी भेदभावों की, छोटे-छोटे स्वार्थों की। बिना छोटी चीजों का मोह छोड़े बड़ी चीज हाथ नहीं लगती।" रामधनी की इन बातों से गाँव के लोगों की आँखों में एक नयी चमक पैदा हो गयी थी।

"छोड़ोजी मोहमाया को, लाओ, दस्तखत करें।" और सबसे पहले बलिराम ने ग्रामदान के कागज पर दस्तखत कर दिया। दस्तखत करते समय उनका हाथ काँप रहा था, और दस्तखत करने के बाद आँखें डबडबा आयी थीं। उनके बाद बगल में बैठे जगत नारायण की बारी थी। बलिराम के काँपते हाथ और दस्तखत के बाद की डबडबाई आँखों को देखकर उन्होंने पूछा, "क्यों, पीड़ा अधिक मालूम होती है ?"

"ओखल में सिर डालकर बलिराम मूसल की परवाह नहीं करता, जगत ! लेकिन जनम-जनम की केंचुल छोड़ते समय कुछ तकलीफ तो हो ही रही है !" बलिराम ने कहा।

"लाओजी, हम भी कर ही दें !" और जगत नारायण ने दस्तखत कर दिया।

हरिहर काका ने आगे बढ़कर कागज थाम लिया और दस्तखत करते हुए गाने लगे :—

"कबिरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ।
जो घर फूँके आपनो, चले हमारे साथ ॥"

और इसके बाद तो दस्तखतों का ताँता लग गया।

कुल ३४५ घरोंवाले इस गाँव में लगभग ३०० लोगों के हस्ताक्षर उसी दिन हो गये।

शाम के समय रामधनी बाबू को विदा करते समय बलिराम पाँड़े उनसे लिपट गये। रुँधे कण्ठ से बोले, "स्वराज के जमाने में बहुत कुछ मैं कर नहीं पाया था रामधनी बाबू, आशाएँ बहुत लगायी थीं कि स्वराज्य के बाद सब कष्ट दूर हो जायेंगे। लेकिन २१ वर्षों में संकट बढ़े ही, घटे नहीं। अब इस नये रास्ते पर आप सबके साथ चलने का इरादा किया है तो साथ निभाना मेरे भाई ! नेता तो काम आये नहीं, अब गाँव को गाँव के लोगों का ही भरोसा है। ग्रामदान के बाद क्या करें ? आपको ही राह दिखानी होगी !"

"राह दिखानी नहीं है, मिलकर खोजनी है बलिराम भाई ! इस जमाने की अँधियारी तभी दूर होगी, जब सब साथ-साथ सहकार की मशाल लेकर आगे बढ़ेंगे।" (क्रमशः)

www.vinoba.in

बहिनजी की डायरी

सुखिया

सुखिया की शादी हुए आठ साल हो गये। बहुत दिनों बाद ससुराल से मायके आयी है। न वह शरीर रह गया है और न चेहरे पर वह चमक। पड़ोसीनों ने बताया कि बीमार है। क्या बीमारी है कोई नहीं बताता; क्योंकि औरत की बीमारी के प्रति पुरुष लापरवाह रहता है, और दूसरी स्त्रियाँ डाह रखती हैं।

अपनी पड़ोसीनों के साथ एक दिन मैं सुखिया को देखने गयी। सात साल बाद गाँव लौटी थी, वह भी बीमार होकर। सोचा कम-से-कम देख तो लूँ। रास्ते में पड़ोसीनें बताती जाती थीं कि न जाने क्या हो गया है कि वह न तो ढंग से नहाती-धोती है, न खाती-पीती है। सोती है तो सोती ही रहती है, रोती है तो रोती ही रहती है। अक्सर रोती दिखाई देती है। मैंने कहा : 'हिस्टीरिया का असर मालूम होता है।'

'बयार है बयार। डाइन लगी है। आठ साल में उसे तीन बच्चे हुए, तीनों मर गये।'—पड़ोसीन ने बताया। मेरा मन साफ़ था कि हिस्टीरिया के सिवाय और कुछ नहीं है। बच्चों के मरने का शोक बर्दाश्त नहीं कर सकी है। इसीसे ऐसी हो गयी है।

दरवाजे पर जाकर पूछा, 'सुखिया कहाँ है ?' उसकी माँ बोली : 'तीसरा पहर हुआ, सुबह से बिना खाये-पीये पड़ी है। आओ, चली आओ।'

मैं दरवाजे के अन्दर घुसी ही थी कि देखती हूँ, सुखिया चली आ रही है। मुझे देखते ही ठिठक-सी गयी। एक क्षण खड़ी रही, आँखें फाड़कर देखती रही, फिर झटके से बैठ गयी। उसकी आँखों से आँसू की धारा बह निकली। यह कहकर रोती जाती थी—'मोर आगम अँधियार होई गइल रे मैया।' 'अइसन अभागिन जनमली रे मैया।' 'सर्पिनियाँ क नाई मोर भइल रे मया।' बार-बार यही कहती और रोती। संतति का शोक उसके रोयें-रोयें से टपकता था। उसके रोग का कारण भी यही था। लेकिन पड़ोसियों की नजर में वह संतति को खा जाने वाली नागिन थी। कोई उसे मातृत्व से वंचित रहनेवाली अभागिन मानता था तो किसीके लिए वह डाइन के कोप का शिकार थी। कोई भी ऐसा नहीं था जो यह कहता कि सुखिया दुखिया है, आदमी है, दुखिया है, इसलिए सहानुभूति की पात्र है। आश्चर्य तो यह था कि स्त्रियों के मन में भी सहानुभूति से अधिक दुराव ही था।

बच्चे न हों, खासकर लड़का न हो तो स्त्री का आगम अन्धेरा क्यों माना जाय ? उसके बच्चे मरें तो वह बच्चों को खानेवाली नागिन क्यों समझी जाय ? क्या स्त्री के जीवन की इतनी ही सार्थकता है कि वह 'रसोई की रानी' और 'पुत्रों की माँ' बने ? समता और स्वतंत्रता के नारे लगानेवाले इस नये जमाने के नये लोगों का भी क्या यही निर्णय है, जो कबीलावादी और सामंतवादी पुराने जमाने का था, कि पिता, पति, और पुत्र से अलग स्त्री का न जीवन है, न व्यक्तित्व ? क्या स्त्री का स्वतंत्र व्यक्तित्व पुरुष-समाज को आज भी मान्य नहीं है ? पुरुषों को छोड़ें, अपने को प्रगतिशील समझनेवाली स्वयं स्त्रियों का क्या निर्णय है ?

पिता, पति, पुत्र सब अपनी जगह ठीक हैं, पर उनके अलग और स्वतंत्र व्यक्तित्व के बिना स्त्री की समानता और स्वतंत्रता का क्या अर्थ होगा ? और जिस परिवार में स्त्री का समान और स्वतंत्र स्थान नहीं है वह आज के लोकतांत्रिक समाज की इकाई कैसे बनेगी ?

सुखिया समझती थी कि अगर उसके बच्चे जिन्दा होते तो वह सुखी होती। उसे क्या पता कि इस जमाने में संतति सच्चे सुख का आधार नहीं रह गयी है ! अपनी जीविका नहीं तो पति या बेटे का मुँह देखना पड़ता है, लेकिन वह प्रश्न आर्थिक विकास का है। सुख के लिए दो चीजें चाहिए—स्वतंत्र जीविका, और अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को पहचानना। लेकिन वह क्रिया तो हमारे देश में अभी शुरू भी नहीं हुई है। शहरों में ही नहीं हुई है, तो गाँवों की कौन कहे ? नये लोग भी यही मानते दिखाई देते हैं कि स्त्री अबला है, इसलिए कृपा की पात्र है, समानता की नहीं। •

आवश्यक सूचना

१८ नवम्बर '६८ के 'भूदान-यज्ञ' के साथ की 'गाँव की बात' का 'मध्यावधि चुनाव' विशिष्टांक दुबारा दो रंगों में छपा है। इसके एक अंक की कीमत सिर्फ २० पैसे है। कार्टूनों से भरा हुआ दो रंगों का यह विशिष्टांक ज्यादा आकर्षक और रोचक बना है। उत्तर प्रदेश में ज्यादा-से-ज्यादा मतदाताओं तक उस अंक को पहुँचाने की कोशिश उत्तर प्रदेश के साथियों ने शुरू कर दी है। आशा है, जिन-जिन प्रदेशों में मध्यावधि चुनाव होनेवाला है वहाँ के साथी उस अंक को मतदाताओं तक पहुँचाने की कोशिश करेंगे।

—व्यवस्थापक

www.vinoba.in

चोरी नहीं, चालाकी

दिल्ली से आसाम मेल में बठी थी। ग्यारह साल के एक लड़के को उसके पिताजी डिब्बे में बैठा गये। थोड़ी देर में गाड़ी चली। साथ-साथ उस लड़के का मन भी सहज ही चंचल हो उठा। उसने धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाना शुरू किया। धुन बड़ी लुभावनी थी। मैंने उससे पूछा, "क्या गा रहे हो ?" उसने बताया, "यह एक नेपाली गीत है। वर्षा के समय बादलों को देखकर बच्चे लोग खुशी से इसको गाते हैं।" मैंने पूछा, "कहाँ जा रहे हो ?" उसने गाँव का जो नाम बताया, उसे मैं ठीक से सुन नहीं पायी। उसने साथ-साथ यह भी बताया कि मुझे वहाँ पहुँचने में दो दिन लगेंगे और दार्जिलिंग में गाड़ी बदलनी पड़ेगी। मुझे कुतूहल इस बात का हो रहा था कि इतना छोटा लड़का अकेला इतनी दूर जा रहा है, फिर भी उसके चेहरे पर चिन्ता या भय का कोई नामो-निशान नहीं दीखता। उसके स्टेशन का नाम जानने के लिए सहज ही मैंने उससे अपना टिकट दिखाने को कहा। उसने कहा, "मेरे पास टिकट है ही नहीं !" मैंने पूछा, "अगर टी० टी० टिकट माँगेगा तो क्या करोगे ?" तो कहने लगा, "मेरे पिताजी ने बताया कि उस समय संडास में घुस जाना।" मैंने कहा, "यह चोरी होगी।" जवाब मिला, "चोरी नहीं, यह तो चालाकी है।"

इस छोटे-से लड़के का ऐसा बुद्धिपूर्ण जवाब सुनकर मैं दंग रह गयी ! फिर पूछा, "अच्छा, यह बताओ कि अगर तुम्हारी जेब में कोई हाथ डालकर पैसे निकाल ले तो उसे क्या कहोगे ?" कहता है, "उसे चोरी ही कहेंगे, लेकिन मैंने किसीकी जेब से पैसे थोड़े ही लिये हैं; वह तो मेरे पैसे मेरी जेब में हाथ डालकर निकालेगा।" मैंने कहा, "परन्तु इसमें धोखा तो होगा ही न ?" "हाँ, धोखा हो सकता है, पर चोरी नहीं।" लड़के ने कहा। 'अच्छा यह बताओ कि इस डिब्बे में बैठनेवाले बहुत-से लोगों ने टिकट न लिया हो और सबके-सब संडास में घुसने लगें और इतनी भीड़ के बीच तुम संडास में नहीं जा सको, तो तुम क्या करोगे?" मेरा प्रश्न था। "तब तो बहुत अच्छी बात है; मैं कहूँगा कि इतने सारे लोगों ने जब टिकट नहीं लिया है तो पहले उनको जाकर पकड़ो, मुझे ही क्यों पकड़ते हो ?" लड़के का जवाब था।

उसकी इतनी चतुराई की बातों को सुनकर उसके साथ और बातें करने की इच्छा बढ़ती गयी। मैंने पूछा, "तुम्हारे कितने भाई-बहन हैं ?" बोला, "तीन भाई और तीन बहनें।" "पिताजी क्या करते हैं ?" "वह हवाई अड्डे पर नौकरी करते हैं। अभी उनकी बदली दिल्ली में हुई है।" "नेपाल क्यों जा रहे हो ?" "मेरी बहन वहाँ पर है और मेरा स्कूल का सर्टीफिकेट भी वहाँ के स्कूल में है; उसके बिना मुझे दिल्ली के स्कूलों में प्रवेश नहीं मिल रहा है। अगर नेपाल से सर्टीफिकेट मिल जायगा तो वापिस आ जाऊँगा, नहीं तो वहाँ पर ही बहन के घर रहकर पढ़ाई करनी पड़ेगी। मेरे पिताजी की आय केवल एक सौ पचास रुपये है। मुझे पढ़ना तो है ही; मेरे पिताजी के पास रुपये नहीं हैं; बताइए कि हम मुसाफिरी न करें ?"

उस बालक ने मेरे सब प्रश्नों के उत्तर तो अपनी बुद्धि के अनुसार दे दिये; लेकिन उसके इस अन्तिम प्रश्न का उत्तर क्या हमारे समाज के पास है जो व्यक्ति को ऐसे कार्य करने के लिए मजबूर कर देता है ?

—क्रान्तिबाला

जहाँ की तहाँ

एक दिन दुर्गापुरा (जयपुर) के पास के एक गाँव में जाने का मौका मिला। सहज ही एक महिला ने पूछा, 'ये क्यों सी आया ?' थोड़े में मैंने अपना परिचय दिया। धीरे-धीरे उनकी उत्सुकता बढ़ती गयी मेरी बातों में। मुझे भी उनकी बातों में मजा आने लगा। तब तक कई महिलाओं ने आकर मुझे घेर लिया। उनमें कुछ महिलाएँ थोड़ी शिक्षित भी मालूम हुईं। बात ग्रामदान की आयी, तो एक ने मुझसे पूछा—'ग्रामदान के बाद क्या होगा ?' मेरे उत्तर देने के पहले ही एक दूसरी महिला ने कहा, 'पहले तो ग्रामसभा बनेगी, फिर सब लोग एक होंगे, मिल-कर काम करेंगे।' मैंने उसकी बातों का समर्थन किया। एक दूसरी महिला ने शिकायत की, 'हमारे गाँव में तो लोग आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं, एकता आयेगी कहाँ से, यह सब होगा कैसे ?' मैंने कहा, 'तो आप लोग क्यों नहीं लड़ाई-झगड़े बन्द करातीं ?' उनका उत्तर था, 'हम गाँव की स्त्रियाँ पुरुष की बराबरी कहाँ तक कर सकती हैं ? असल बात तो यह है कि हमें घर के काम से फुरसत नहीं, फिर गाँव की स्त्रियों में इतना ज्ञान भी कहाँ है ? पर ऐसा लगता है कि आपसी झगड़ा मिट जाय तो बहुत कुछ हो सकता है।'

राजस्थान के बहुत सारे गाँवों में पर्दा-प्रथा करीब-करीब नहीं है। स्त्रियाँ कर्मठ होती हैं। परन्तु बाहरी कामों के बारे में पुरुषों पर ही निर्भर रहती हैं। ग्रामदान के बाद स्त्रियों के विकास की दिशा क्या हो, यह एक सोचने-विचारने लायक प्रश्न है। हमने देखा कि यहाँ स्त्रियों में जानने की उत्सुकता है, पर अज्ञानता भी कम नहीं है। राजस्थान की बहनें ग्रामदान में काफी सहयोग कर सकती हैं, क्योंकि उनमें संकोच कम है,

समस्याओं से जूझने की तैयारी भी कहीं-कहीं दिखाई देती है। इसलिए इनमें जागृति लाना सरल होगा। परन्तु अभी यहाँ ग्रामदान-आन्दोलन की गति काफी मन्द है। महिलाओं में तो इसका प्रचार नाममात्र का है। चलते समय एक महिला ने कहा, 'बहनजी, आप आयीं और जा रही हैं, पर हम जहाँ-के-तहाँ रह जायेंगी। इसका भी कोई उपाय है ?'

इस प्रश्न पर सोचते-सोचते रास्ता कट गया, पर कोई उपाय सूझा नहीं ! सोच रही हूँ कि आखिर कब तक नारी समाज "जहाँ-का-तहाँ" पड़ा रहेगा ? ग्रामदान से निजी स्वामित्व मिटेगा, ग्रामसभा द्वारा सबका हित होगा, तब शायद महिलाओं की भी स्थिति सुधरे। —करुणा

प्रधान वजीर का चुनाव

एक देश में सम्राट के प्रधान वजीर की मृत्यु हो गयी। अब दूसरे वजीर की जरूरत थी। उस देश में यह रिवाज था कि देश भर में वजीर के चुनाव की सूचना हो जाती थी और जितने लोग उम्मीदवार होते थे उनकी जाँच होती थी। जो प्रथम आता था वह प्रधान वजीर बनाया जाता था। ऐसा ही हुआ। पूरे देश से तीन आदमी चुने गये। इन तीनों में जो प्रथम होगा, उसे वजीर बनना था। इनकी जाँच स्वयं सम्राट करनेवाले थे। इनको इस बात की फिकर थी कि न जाने सम्राट क्या पूछें ! इन्होंने इधर-उधर से छताछ शुरू की। गाँववालों को मालूम था कि जाँच में क्या पूछा जायेगा। गाँववालों से उन्हें मालूम हो गया कि तीनों को एक कोठरी में बन्द किया जायेगा। उसमें एक ताला लटका होगा। वह ताला इंजीनियर और गणितज्ञ की राय से बना है। उस पर कुछ गणित के आँकड़े लिखे होंगे। वह ताला किसी कुञ्जी से नहीं खुलेगा।

अब, उस ताले को तीनों में से जो खोलकर पहले बाहर निकल आयेगा वह वजीर बनेगा।

इतना सुनते ही 'एक' चादर तानकर सो गया। बचे दो। दोनों ने गणित शास्त्र की खूब छान-बीन की। साथ में गणित की एकाध पोथी भी चोरी से रख ली। जब समय हुआ तो चले सम्राट के पास। तीसरा भी पीछे साथ हो लिया। दोनों ने पूछा, 'क्या तुम भी चल रहे हो ?' उसने कहा, 'चले चलते हैं।' तीनों सम्राट के पास पहुँचे। सम्राट तीनों को उस कोठरी में ले गये। उन्हें बताया कि यह है दरवाजा और यह लटका है ताला। जो खोलकर पहले बाहर निकलेगा वह वजीर बनेगा। सम्राट ने बाहर निकलकर ताला लगा लिया। जिन दो ने पोथी साथ में रखी थी, वे लग गये ताला खोलने के शास्त्र की खोज में। तीसरा एक कोने में बैठ गया। थोड़ी देर बाद जब दोनों शास्त्र में मशगूल हो गये, तो वह उठा, दरवाजा खोला और बाहर आ गया।

सम्राट उस आदमी को लेकर जब अन्दर आये और बोले, 'पण्डितों, क्या कर रहे हो, जिसे निकलना था, वह निकल गया।' तब पण्डितों को होश आया। उन्होंने पूछा, 'क्यों भाई, तुम कैसे निकले ?' तो उसने कहा, 'मैंने कुछ नहीं किया। सोचा, जरा देखूँ तो ताला बन्द भी है या नहीं ! दरवाजा खोला और खुल गया।'

आज बिलकुल यही हाल चारों तरफ है। समस्या का पता नहीं, सभी निदान में लगे हुए हैं। और समस्या अपनी जगह ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। —आचार्य रजनीश द्वारा कथित

सर्वोदय बनाम साम्यवाद

रामपट्टी-ग्रामसभा के अध्यक्ष सीताराम पांडे एम० ए० पास नवयुवक हैं, कम्युनिस्ट हैं। उन्होंने अपने खून से हस्ताक्षर दिये हैं। ग्रामोदय-सहयोग-समिति के भी अध्यक्ष हैं। समिति का भवन सबने टोकरी सिर पर ढो-ढोकर बनाया। बोर्ड से बीस हजार रुपये का ऋण मिला। अभी खादी और रेशम-उद्योग है, तेल-घानी शीघ्र शुरू होगी। गाँव में रात्रि-पाठशाला चल रही है। जनसंख्या तीन सौ है। गाँव की चालीस एकड़ भूमि में से तीस एकड़ ग्रामदान में है। दस परिवारों के पास जमीन है। शेष भूमिहीन रस्सी बटते है, बँटाई और मजदूरी करते हैं। महंथ मनमोहनदास के पास तीन सौ बीघा जमीन है। वे बँटाईदारी-कानून के भय से, बँटाईदार से बिना पूछे कच्चा धान कटवा लेते हैं, मेड़ तोड़ देते हैं।

मैंने महंथजी से ग्रामदान में शामिल होने का पुनः अनुरोध किया। उन्होंने मुझसे साहित्य खरीदा और पढ़कर निर्णय देने का वादा किया। कम्युनिस्ट भाई कहते हैं, कि लोगों का धैर्य टूट रहा है। भूदान नहीं आया होता, तो सारे देश में खूनी क्रान्ति आ गयी होती !

कार्यसमिति के मंत्री भुवनेश्वर ठाकुर जौनपुर के चीनी मिल में काम करते थे। विनोबा का एक लेख पढ़कर नौकरी छोड़कर गाँव लौट आये। जब उनसे पूछा कि विनोबा से मिले हैं या नहीं, तो बोले : "ग्रामस्वराज्य को साकार कर मिलूँगा।"

ग्रामदान-पुष्टि के कागजात तैयार कर शासन को भेज दिये हैं। उनका दावा है कि सर्वोदय-विचार से ही त्राण होगा, साम्यवाद से नहीं। —जगदीश थवानी

www.vinoba.in

केला उगाइए और खाइए

केला स्वादिष्ट और सस्ता फल है। इसकी खेती बड़े पैमाने पर की जा सकती है और आंगन में भी कुछ पेड़ लगाकर थोड़ा फल प्राप्त किया जा सकता है। अपने देश के कुछ क्षेत्रों में केलों की खेती बड़े पैमाने पर का जाती है। भारतीय केले की मांग देश तथा विदेश के बाजारों में बढ़ती जा रही है। इसके परिणाम स्वरूप बहुत-से किसान केले की खेती व्यवसाय के रूप में करने लगे हैं।

बहुत-से किसान, खासकर गुजरात के किसान केवल केले की खेती करने लगे हैं, क्योंकि इससे उनको दूसरे फल या अनाज की फसलों के मुकाबले ज्यादा मुनाफा मिल रहा है।

एक कहावत है कि अगर कोई केले के ३६५ पेड़ लगाता है तो उनसे उसको साल में ३६५ दिन ही आमदनी होती है। चूंकि केला सारा साल उगाया जा सकता है, इसलिए इसकी फसल से किसान को पूरे साल आमदनी हो सकती है।

केले की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह सबका मनभाता फल है। साथ ही यह मनुष्य का पूर्ण आहार है। इसमें विटामिन, लोहा, फास्फोरस वगैरह पोषक तत्त्व दूसरे सभी फलों तथा सब्जियों के मुकाबले ज्यादा होते हैं। इसीलिए केला अरसे से लोगों का मुख्य भोजन रहा है।

केला कच्चा तथा पकाकर, दोनों तरह से खाया जाता है। बहुत-से देशों में इसका शरबत भी पीया जाता है। केले के आटे में गेहूँ के आटे के मुकाबले खनिज तीन गुना अधिक होते हैं।

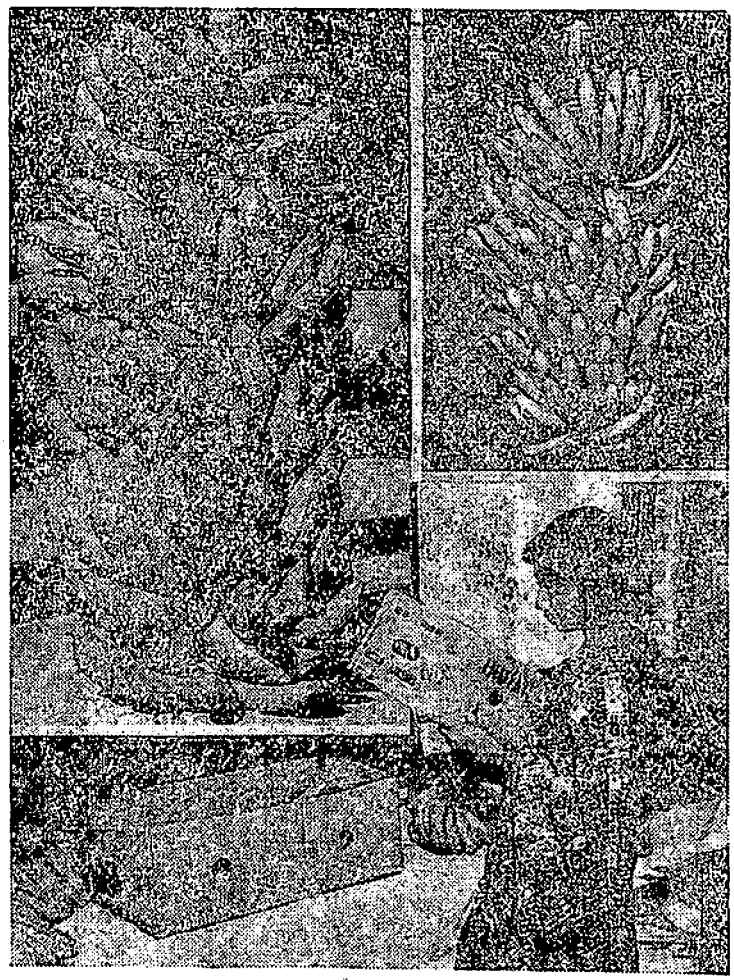

फल तो फल, इसके कोमल नर फूल तथा गोभ के भी तरह-तरह के व्यंजन बनाये जा सकते हैं। महाराष्ट्र में केले की गोभ से कागज बनाया जा रहा है। इसके फल से स्टार्च तथा खमीर बनाया जा सकता है। इसके अलावा केला दवाइयों के काम में भी आता है।

इतने सारे केले के उपयोग देखकर भारतीय कृषि-अनुसंधान परिषद् ने इसके विकास के लिए अखिल भारतीय समन्वय प्रयोजना चालू की है। इस प्रयोजना के मुताबिक केले की खेती सभी पहलुओं से सुधारने के लिए खोज की जा रही है। इसके केन्द्र केला उगानेवाले विभिन्न राज्यों में हैं, जसे— पश्चिमी बंगाल में चिन्सुरा, मद्रास में अवुथुरई, महाराष्ट्र में पूना, आंध्र प्रदेश में टणकू और केरल में कन्नारे। केले की लगभग ६० किस्में हैं, लेकिन व्यवसाय के लिए उनमें से सिर्फ एक दर्जन किस्में ही उगायी जाती हैं। किस्मों का चुनाव इस आधार पर किया जाता है कि वे दूर भेजने पर खराब न हों और साथ ही खूब स्वादिष्ट हों।

केले की वसरई ड्वार्फ सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक किस्म है और इसकी विदेशों में सबसे अधिक मांग है। इस किस्म का फल तीन-चौथाई पकने पर तोड़ा जा सकता है और इसे शीत भंडार में १५ से २० दिन तक रखा जा सकता है।

बंगाल का मोर्टोमन किस्म का केला संसार भर का सबसे स्वादिष्ट केला है। इस तरह हरी छाल केले को भी बहुत-से लोग पसन्द करते हैं। नेन्द्रन केले की केरल की एक प्रचलित किस्म है, जिसे कच्चा तथा पकाकर दोनों तरह से खाया जा सकता है। प्रत्येक परिवार अपने आंगन में, कुएं के पास कुछ पेड़ लगा दे तो उसे वर्ष में थोड़े दिन तो बिना पैसे के ही केले प्राप्त हो सकते हैं।

—'फार्म फीचर' से

गुरुजी की गुरुता : गणों की लघुता

"पा लगी सुकुल बाबा।"

"मस्त रहो, कहो बहादुर, खेती-गृहस्थी का हालचाल!"

"आपके आशीर्वाद से सब कुशल है गुरुजी। किसी तरह खेतों की बोआनी पूरी हो गयी। अब मटर की सिंचाई में लगना है।"

"एक काम करो बहादुर, केराय की सिंचनी में दो-एक दिन की देर भी हो जाय तो अभी कोई हरज नहीं है। हमारी भी अभी आधी केराय सींचने के लिए पड़ी है।"

"आज्ञा दीजिए गुरुजी, सबेरे-सबेरे आपके दर्शन हुए हैं। नहीं, नहीं कहूंगा।"

"मुझे भी ऐसी ही आशा थी। १४ नवम्बर को पूज्य गुरुजी प्रयाग होते हुए काशी आ रहे हैं। प्रयाग से काशी की जनता को पीछे नहीं रहना चाहिए, इसीलिए हम चाहते हैं काशी में पूज्य गुरुजी का प्रयाग से भी बढ़चढ़कर स्वागत हो।।"

"तो कहिए गुरुजी, मुझे क्या करना होगा?"

"तुम्हारे टोले से कम-से-कम १० जवान मेरे साथ काशी नहीं चलेंगे तो हमारे इस शिवपुरवा गांव की प्रतिष्ठा घटेगी। इससे छोटे-छोटे काशी के मुहल्लों से ५०-५०, १००-१०० युवक पूज्य गुरुजी का स्वागत करने आयेंगे। हम लोग १० भी नहीं होंगे तो वहाँ क्या मुंह लेकर जायेंगे?"

"गुरुजी! १० की क्या बात है, मौका पड़ने पर १०० आदमी भी हमारे टोले से जुट सकते हैं।"

"लेकिन एक बात है कि सबको खाकी नेकर, सफेद कमीज, काली टोपी और फौजी बूट पहनकर जाना होगा।"

"यह तो कठिन बात है। इतने लोगों के लिए यह लिबास कहाँ से आयेगा?"

"बहादुर, यह कोई ऐसी बहुत बड़ी कठिनाई नहीं है, जो हल न हो सके। १० लोगों की जगह २० तक के लिए सब व्यवस्था मेरे पास है।"

"सिर्फ इतनी ही बात नहीं है गुरुजी, जिसको पैंट-कमीज और बूट पहनने की आदत होगी, वही न आपके साथ जायेगा?"

"मैं सबको पैंट-कमीज पहनने के लिए जोर नहीं देना चाहता। जो गणवेश पहनकर चल सके अच्छा है। वह खूब अच्छी तरह पूज्य गुरुजी के दर्शन कर सकेगा। जो गणवेश में नहीं जायेंगे उन्हें दर्शकों की कतार में रहना होगा। मेरी इच्छा थी कि हम शिवपुरवा के सब लोग एकसाथ रहते तो खूब शान रहती। जो कुछ भी हो, अपने साथ ज्यादा-से-ज्यादा आदमी लेकर चलना है।"

निश्चित दिन बहादुर अपने टोले के कुछ लोगों के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी (श्री माधव-राव सदाशिव गोलवलकर) का स्वागत करने के लिए वाराणसी पहुँचा। वाराणसी के बेनिया बाग के मैदान में श्री गोलवलकर की सार्वजनिक सभा की व्यवस्था थी। सभा के मंच को एक किले के समान बनाया गया था। श्री गोलवलकर के आने पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सभी लोगों ने सलामी दी। स्वागत के बाद श्री गोलवलकर का भाषण शुरू हुआ: "हिन्दू अपने को हिन्दू कहलाने में शर्म करते हैं। हिन्दू राष्ट्र की प्रबल भावना पर आधारित राष्ट्र की रचना से ही देश की अखण्डता एवं स्वतंत्रता की रक्षा संभव है। हिन्दू राष्ट्रीयता को स्वीकार करने पर ही देश सम्पन्न और शक्तिशाली हो सकता है। अल्पसंख्यकों को हिन्दू समाज से डरना नहीं चाहिए! उनकी प्रगति हिन्दू समाज के साथ चलने में ही सम्भव है...।" लेकिन बहादुर समझ नहीं पा रहा था कि इस हिन्दू राष्ट्र और अल्पसंख्यक आदि की बड़ी-बड़ी बातों से हमको क्या लेना-देना! दूसरी बात उसके मन में खटकने लगी कि गुरुजी तो कुछ ज्ञान की बात सुनाते, लोक-परलोक सुधारने का उपाय बताते तो हमको कुछ हासिल भी होता, लेकिन ये तो दूसरे सब नेताओं की तरह राष्ट्र, सरकार आदि की ही बातें कर रहे हैं।

जब गुरुजी का भाषण हो रहा था, उस समय अल्पसंख्यक-वाली बात उसकी समझ में नहीं आयी थी। पास खड़े एक पढ़े-लिखे आदमी से —जो खाकी पैंट, सफेद कमीज, काली टोपी और काला बूट पहने, हाथ में एक अहीरउ लाठी लिये खड़ा था—पूछा था, कि अल्पसंख्यक माने क्या होता है? तो उसने जवाब दिया था, हमें इसी लाठी के जोर से सब साले मुसल-मानों को मार भगाना है। एक भी मुसलमान को यहाँ नहीं रहने देना है।

हे भगवान्, तो क्या ये हिन्दू-मुसलमान दंगा कराने की तैयारी कर रहे हैं? एक बार मार-काट हुई तो देश के टुकड़े हुए, अब दुबारा फिर खून की नदी बहेगी तो भारत माता के दिल के और कितने टुकड़े होंगे?

बहादुर को लगा कि गुरुजी के लिए किले जैसा बनाया गया सभा का मंच जिस तरह एक ढकोंसला है उसी तरह उनकी कथनी और उनके गुणों की करनी में भी भयंकर ढकोसलेबाजा है। इससे सावधान रहना होगा, इस जहर को फैलाने से रोकना होगा।

'गाँव की बात' : वार्षिक चन्दा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित और इंडियन प्रेस (प्रा०) लि०, वाराणसी में मुद्रित।